हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A, Part III

विषय - सूर का वात्सल्य वर्णन

भक्तिकाल की सगुण भक्ति-धारा की कृष्णाश्रयी शाखा में सूरदास अग्रगण्य कवि हैं जिनका बाल-वर्णन हिन्दी-साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। सूरदास को कोमल हृदय और भावुक मन मिले थे। उनकी कोमलता और भावुकता का ज्वलंत प्रमाण हमें उनके वात्सल्य वर्णन में दिखायी पड़ता है। उनका वात्सल्य वर्णन कई रूपों में दिखाई पड़ता है। सर्वप्रथम तो बाल-स्वरूप, बाल प्रकृति और माता हृदय की कोमलता आदि के वर्णन में सूर ने कमाल की सफलता पायी है।

सूरदास के वात्सल्य के आधार हैं श्रीकृष्ण। जब कृष्ण शिशु रूप में पालने में सोते हैं उसका वर्णन और सूरदास ने जिस विस्तृत और व्यापक बाल-चरित्र को अंकित किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

Perfection is not attainable, but if we chase perfection we can catch excellence. – Vince Lombardi

शिशु कृष्ण की मोहक छवि और माता-यशोदा के हार्दिक आह्लाद को उन्होंने पालने के साथ दिखाया है :—

यशोदा हरि पालने झुलावै
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ.
सो नन्दभामिनी पावै ॥

जैसे-जैसे कृष्ण बड़े होते हैं, वैसे-वैसे उनमें बाल-प्रवृत्तियाँ जागती हैं। माता यशोदा कृष्ण को अपनी उँगली थाम कर आँगन में चलना सिखाती है। इतना ही नहीं कृष्ण अन्य सामान्य बालों की तरह माटी खाते हैं, घुटुरन चलते हैं और लार भी टपकाते हैं। सूरदास के वात्सल्य की सजीवता इसमें दिखायी पड़ती है कि कृष्ण उनके आराध्य होकर भी सामान्य बने हुए हैं। कृष्ण की बाल-

Sunday

सुन्दरता का वर्णन करते समय सूरदास ने जो चित्रात्मकता उपस्थित की है, उसमें सजीव बिम्बों का सौंदर्य दिखाई पड़ता है। जैसे —

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।

बाल-सुलभ प्रवृत्तियों के वर्णन में सूरदास को बड़ी सफलता मिली है। सूरदास ने बाल-प्रवृत्तियों का ऐसा निरीक्षण किया है कि बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता भी दाँतों तले उंगली दबाने लगते हैं। स्वाभाविक है कि खेल-खेल में बच्चे एक-दूसरे को चिढ़ाते हैं। बच्चे इसकी शिकायत अपनी माँ से करते हैं। कृष्ण में भी यह प्रवृत्ति है। जब बलराम उन्हें चिढ़ाते हैं तो इसकी शिकायत माँ के सामने दर्ज हो जाती है —

"मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मोसो कहत मोल को लीनो, तोहि जसुमति कब जायो।"

इसके ~~जवाब~~ जवाब में माता-यशोदा की यह स्नेह-पूर्ण उक्ति कितना सजीव है —

'सुनहु कान्ह बलभद्र चवाई जनमत को ही धूत।
सूर स्याम मों गोधन की सौं हौं माता तू पूत॥

इसी तरह बच्चों में झूठ बोलना, चोरी करना, हठ करना, ईर्ष्या करना आदि बाल प्रवृत्तियाँ होती हैं इन बाल-प्रवृत्तियों के सूक्ष्म निरीक्षण और सजीव वर्णन में सूरदास ने अन्य कवियों को बहुत पीछे

पीछे छोड़ दिया है।" मैया मोरी चन्द्र खिलौना लैहे" में हठ की प्रवृति का वर्णन हुआ है तो "मैया मोरी मैं नहि माखन खायो" पद में झूठ का सजीव वर्णन हुआ है।

वात्सल्य वर्णन के अन्तर्गत सूरदास ने यशोदा के हृदय पुलक का जो वर्णन किया है, उसमें विश्वव्यापि माता-पुत्र के दुलार और लाड़-प्यार की झलक मिलती है। कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद यशोदा में वात्सल्य विरह का भाव जागता है। ऐसी हालत में नन्द और यशोदा के बीच आपसी नोक-झोंक होता है जिसमें वात्सल्य की मार्मिकता मिलती है। यशोदा मथुरा जानेवाले राहगीरों से कहती है कि तुम मेरा संदेशा देवकी से कहना। मैं तो कृष्ण की 'धाय-माँ' थी लेकिन मातृत्व का भाव मुझमें भी है।

अतः हम कह सकते हैं कि सूरदास का वात्सल्य वर्णन उस ऊँचाई तक पहुँच गया है जहाँ तक किसी अन्य कवि की कलम आज तक नहीं पहुँची। सरलता, सहजता और सर्वत्र स्वाभाविकता के कारण सूर का वात्सल्य वर्णन हृदय को छू जाता है। बाल सौंदर्य के एलबम में, ने अनेक तस्वीरें सजायी हैं, जिसमें मातृहृदय उमड़ रहा है